जैन पुराणों का वैशिष्ट्य

-प्रो. वीरसागर जैन

विश्व के पुराणों में जैन पुराणों का अपना विशेष महत्त्व है, जिसे निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है-

1. उनकी संख्या अठारह आदि कुछ निश्चित नहीं है | वे सैंकड़ों की संख्या में हैं | उनमें से कतिपय प्रमुख के नाम हैं- पद्मपुराण, महापुराण, हरिवंशपुराण, पार्श्वपुराण, पांडवपुराण, आदि |
2. उनका लेखक भी कोई एक ही महर्षि नहीं है | सबके रचयिता भिन्न-भिन्न सैकड़ों आचार्य हैं | उनमें से कतिपय प्रमुख के नाम हैं- आचार्य रविषेण, आचार्य जिनसेन, आचार्य पुष्पदंत, आचार्य शुभचन्द्र, महाकवि भूधरदास आदि |
3. सबका रचनाकाल भी एक ही नहीं है | हजारों वर्षों तक विस्तृत भिन्न-भिन्न है | पहला लिखित जैन पुराण ....माना जाता है | उससे पूर्व उनकी मौखिक या श्रुत परम्परा प्रचलित थी |
4. जैन पुराणों की भाषा भी कोई एक ही नहीं है | वे प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, तमिल, कन्नड़, व्रज, राजस्थानी, हिन्दी आदि लगभग सभी भाषाओं में उपलब्ध होते हैं |
5. जैन पुराणों में अतिरंजकता या अविश्वसनीयता के तत्त्व बहुत कम हैं | जो हैं, वे भी गहराई से समझने पर विश्वसनीय और व्यावहारिक सिद्ध हो जाते हैं |
6. दार्शनिकता की दृष्टि से भी जैन पुराण विशेष महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं | उनमें षड्दर्शन-परिचय, जगत्-मीमांसा, ईश्वर-मीमांसा, आत्म-मीमांसा, प्रमाण-मीमांसा आदि अनेक दार्शनिक विषयों की गम्भीर चर्चा उपलब्ध होती है |
7. साहित्यिकता की दृष्टि से भी जैन पुराण बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं | वस्तु-वर्णन, चरित्र-चित्रण, रस-विधान, भाषा-शैली, छन्द-अलंकार आदि सभी दृष्टियों से उनका अध्ययन अतीव रोचक होता है |
8. जैन पुराण महाकाव्यत्व की कसौटी पर भी खरे उतरते हैं | उनमें महाकाव्य के सभी शास्त्रीय गुण पाए जाते हैं- मंगलाचरण, वस्तु-वर्णन, चरित्र-चित्रण, नवरस-विधान, सर्ग-विभाजन, सज्जन-प्रशंसा, निजलघुता-वर्णन, प्रशस्ति, आदि |
9. जैन पुराणों की कथा नायक के विवाह या राज्यारोहण पर समाप्त नहीं होती है, अपितु उसके मोक्ष-गमन तक चलती है | अर्थात् जैन पुराण सही अर्थों में सुखान्त सिद्ध होते हैं |
10. जैन पुराणों में नायक की अनेक पीढ़ियों का नहीं, अपितु अनेक भवों का चित्रण होता है; क्योंकि उनमें किसी एक वंश का इतिहास नहीं, अपितु किसी आत्मा के उत्थान-पतन की कहानी सुनाई जाती है |
11. जैन पुराण इतिहास की दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं | इनके मंगलाचरण और प्रशस्तियों में इतनी अधिक सामग्री मिलती है कि उनसे इतिहास की अनेक टूटी कड़ियाँ जोड़ी जा सकें | अनेक जैन आचार्यों का परिचय शोधार्थियों ने इनके आधार से ही लिखा है |

12. जैन पुराण सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं, क्योंकि इनमें विविध संस्कारों, क्रियाओं, कलाओं और विभिन्न ज्ञान-विज्ञान का निरूपण भी उपलब्ध होता है |
13. नीति, सूक्ति या सुभाषितों की दृष्टि से भी जैन पुराण अत्यन्त उपादेय सिद्ध होते हैं, क्योंकि इनमें जीवनोपयोगी नीति-वचनों, सूक्तियों या सुभाषितों का अद्‌भुत भण्डार भरा है |
14. वर्तमान युग में हिन्दी भाषा के प्रचार में भी जैन पुराणों का बड़ा योगदान रहा है, क्योंकि उन्नीसवीं सदी में जब इनका हिन्दी में अनुवाद हुआ तो हजारों पाठकों ने इनके अध्ययन के लिए ही हिन्दी भाषा को सीखा था | जैन पद्मपुराण का तो कहना ही क्या, हस्तलिखित ग्रन्थ-भण्डारों में पूरे देश में सर्वाधिक हिन्दी-वचनिकाएँ उसी ग्रन्थ की प्राप्त होती हैं |
15. प्राय: सभी जैन पुराण पद्य में ही पाए जाते हैं, परन्तु कतिपय जैन पुराण गद्य या चम्पू शैली में भी पाए जाते हैं | यथा- यशस्तिलकचम्पू |
16. अनेक जैन पुराण ऐसे भी हैं, जो 'चरित' के नाम से लिखे गये हैं | यथा- त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, पद्मचरित, पउमचरियं, पउमचरिउ आदि |